"यदि वास्तव में आप गरीबों की मदद करना चाहते हैं तो पहले आप स्वयं अमीर बनें, फिर अमीर बनने में उनकी मदद करें।"

. . . यह पुस्तक आपको सफलता का रहस्य विस्तार से समझाएगी। मेरा दावा है कि इस विषय पर आपको अब दूसरी कोई पुस्तक पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

अंतर्राष्ट्रीय बेस्ट सेलर

अमीरी का रहस्य

(द साइंस ऑफ गैटिंग रिच का हिंदी अनुवाद)
1910 में लिखी गई ऐतिहासिक पुस्तक
जो आपका जीवन बदल डालेगी!

लेखक

वैलेस डेलोएस वेट्टल्स

क्यूफोर्ड, भारत द्वारा प्रकाशित

आपका निर्णय आपका अधिकार!

"प्रकाश बाँटने से चिराग की रौशनी कम नहीं हो जाती।"

मदर टेरेसा

संदेह बाधा देखता है, विश्वास मार्ग
संदेह अंधेरा देखता है, विश्वास प्रकाश
संदेह रोकता है, विश्वास आगे बढ़ाता है
संदेह सवाल करता है, विश्वास जवाब देता है।

रिच दे वॉस

विषय – वस्तु

परिचय

प्रस्तावना

दो शब्द

1.	अमीर बनिए	15
2.	अमीरी का विज्ञान	19
3.	समान अवसर	23
4.	पहला नियम	27
5.	जीवन विस्तार	35
6.	लक्ष्मी आपके द्वार	41
7.	कृतज्ञता	47
8.	सोच निर्धारित दिशा में	53
9.	इच्छा शक्ति का सदुपयोग	59
10.	सफलता का बीज	67
11.	पुरुषार्थ सही दिशा में	73
12.	कुशल प्रयास	79
13.	सही काम की तलाश	85
14.	प्रचुरता की अभिलाषा	89
15.	प्रगति पुरुष	95
16.	निष्कर्ष एवं सावधानियां	99

मांगो, तुम्हें दिया जाएगा, किन्तु संतुष्टों से वापस ले लिया जाएगा।

बाइबल

शिखर पर पहुंचकर ही आप अन्य शिखरों को लांघने की कला सीख पाएंगे।

– नेल्सन मंडेला

निश्चित उद्देश्य वाले व्यक्ति कुछ भी पा सकते हैं।

– सैमुअल विल्सन

हीरों की खोज में ज्यादातर कोयला ही हाथ लगता है, मोल होता है तो सिर्फ हीरों का। खुदाई कर्ता का पूरा ध्यान हीरों की तरफ रहता है न कि कोयले की ओर क्योंकि उसका लक्ष्य हीरे हैं न कि कोयला।

– स्वेट मार्डन

अगर इस दुनिया के होने का कोई मकसद है तो इसमें हमारे होने का भी एक मकसद है, इसे खोज निकालो।

– आइंस्टीन

पैसा उस छठी इंद्री के समान है जिसके अभाव में बाकी पांच भी निष्क्रिय हो जाती हैं।

– विलियम समरसेट मघम

प्यार ही सब कुछ है, पैसा नहीं। सौभाग्य से मैं पैसे से प्यार करता हूँ।

– बिलि लिम

आप जानते हैं कि रुपया समस्त समस्याओं की जड़ है, परंतु क्या आपको पता है रुपए की जड़ कहां है?

– ऍनी रैंड

हम खुद ही को धनवान बनने से रोकते हैं।

– अज्ञात

हर आदमी स्वर्ग जाना चाहता है परंतु कोई मरना नहीं चाहता।

– अज्ञात

परिचय

पिछले एक शतक से भी अधिक समय से हजारों-लाखों लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत साबित हो चुके, अंतर्राष्ट्रीय बेस्ट सेलर "द साइंस ऑफ गैटिंग रिच" के लेखक वैलेस डेलोएस वेट्टल्स (1860-1911) का नाम किसी तारीफ का मोहताज नहीं है। हालांकि उनके बारे में लोग बहुत ही कम जानते हैं, सिवाए इसके कि उनका जन्म अमेरिका में हुआ और अपने शुरुआती दिनों में उन्हें भारी तनाव, गरीबी एवं विफलता के दौर से गुजरना पड़ा था।

अंततः वेट्टल्स ने अपना जीवन बदलने का फैसला किया। उन्हीं के शब्दों में, "यदि आप अमीर, कामयाब एवं स्वस्थ बनने का निर्णय नहीं लेते हैं तो समझिए कि अनजाने में आपने गरीब, नाकामयाब एवं रोगी बने रहने का फैसला कर लिया है।" कामयाबी वेट्टल्स की प्राथमिकता थी, उनकी बेटी फ्लोरेंस के अनुसार, "वे अधिकतर समय लेखन में व्यस्त रहा करते थे। कामयाब लेखक, शक्तिदूत तथा प्रगति पुरुष बनना उनका सपना था, जिसे साकार करने के लिए उन्होंने दिन रात काम किया। उन्होंने इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ को जिया है. . . वास्तव में वे शक्ति का विशाल स्रोत थे।" वेट्टल्स, डेस्कर्ट्स, इमर्सन, हेगल, लेबनित्ज, शोपेनहौर तथा पिनोज़ा से अत्याधिक प्रभावित थे।

अविराम अध्ययन एवं कठिन परिश्रम के परिणाम स्वरूप संपत्ति, स्वास्थ्य एवं सफलता को मिलाकर उन्होंने एक नए दर्शन को जन्म दिया, जिसके चलते उनके स्वयं के जीवन में भारी परिवर्तन हुआ।

वर्ष 1910 में इस पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात् उनका देहांत

हो गया। परंतु उनका ऐतिहासिक लेखन आज भी प्रेरणा स्रोत बनकर संपूर्ण विश्व में लाखों लोगों को सफल एवं धनी बनने का रहस्य बता रहा है।

प्रस्तावना

सफलता एवं विफलता से जूझते हुए वर्ष 1983 से मैं स्वयं का व्यापार कर रही हूँ। मेरी कम्पनी मेनहेट्टन, अमेरिका में अनेक फॉर्चून 500 कम्पनियों के लिए मार्केटिंग सामग्री तैयार करती है, जिन्हें हम अनेक व्यवसायियों को उनका व्यापार बढ़ाने में मदद करने के लिए वितरित करते हैं।

पिछले आठ से भी अधिक वर्षों से मैं स्वयं का फुल तथा पार्ट टाइम बिजनेस बनाना सीखने तथा सिखाने में लोगों की मदद कर रही हूँ।

वर्ष 1998 के बसंत में एक अनजान व्यक्ति ने मुझे एक पुस्तक भेजी, जिसे लगभग 90 साल पहले लिखा गया था। उस छोटी सी पुस्तक ने मेरा संपूर्ण जीवन बदल कर रख दिया। उन सिद्धांतों के बारे में आप इस पुस्तक में विस्तार से पढ़ेंगे, जिनके परिणाम आश्चर्यजनक हैं।

पुस्तक के शीर्षक मात्र ने ही मुझे इतना अधिक आकर्षित किया कि मैं इसे पढ़ने की अपनी जिज्ञासा को रोक न सकी। पुस्तक की भाषा पुराने फैशन की थी तथा बहुत से सिद्धांतों से मैं सहमत नहीं थी। परंतु जब मैंने उन्हें दो-तीन बार दोबारा पढ़ा तो मुझे उनका रहस्य समझ में आने लगा। इसके बाद मैं स्वयं को पूरी पुस्तक पढ़े बिना रोक न सकी।

पुस्तक में बताए गए सिद्धांतों का पालन करने पर सभी कुछ बदलना शुरु हो गया। "आश्चर्यजनक" परिवर्तन हुए - संबंधों में विस्तार होने लगा . . . नये मित्र बनने लगे . . . नए स्रोत खुलने लगे . . . धन-संपदा में असाधारण वृद्धि होने लगी।

पुरानी सोच को बदलना बहुत ही कठिन होता है। मैं अभी भी

किसी नई शुरुआत के लिए तैयार नहीं थी, परंतु मेरा व्यापार बढ़ता ही जा रहा था। मेरे मुनाफे में दो गुनी से भी अधिक की वृद्धि दिखाई देनी आरंभ हो चुकी थी . . . मैंने बड़ा घर ले लिया . . . अनेक कामयाब एवं धनी लोगों से मेरी मित्रता होने लगी . . . नए अवसर मेरा द्वार खटखटा रहे थे।

सचमुच यह आश्चर्यजनक था!

इस पुस्तक के प्राप्त होने से पहले मैंने न तो इन चमत्कारिक सिद्धांतों के बारे में कभी पढ़ा था, न ही सुना था। संपत्ति एवं सफलता के इन नियमों का विरोध करने के बजाए हमें इनका पालन करना होगा। बिना इन्हें जाने विपरीत दिशा में चलने की जगह हमें इनके साथ बहना होगा। ऐसा करने पर आप पाएंगे कि हमारे द्वारा इच्छित परिणाम स्वयं चलकर हमारी ओर आना शुरु हो जाते हैं। तथा यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि क्रिया, प्रक्रिया और प्रतिक्रिया आपस में जुड़े होते हैं।

अपनी इस पुस्तक में वैलेस वेट्टल्स कहते हैं कि आप बिना यह जाने कि ये सिद्धांत कैसे काम करते हैं इनका पालन करें, जैसा कि मैंने किया। हालांकि मेरे अंदर भी प्रतिरोध पैदा हुआ परंतु अस्थाई तौर पर मैं इनसे सहमत हो गई और पुस्तक के समाप्त होने तक मुझे मेरे सभी सवालों के जवाब मिलते चले गए। तब मुझे पता चला कि हमारी पुरानी सोच ही हमें इन विचारों का विरोध करने के लिए बाध्य करती है। आपके साथ भी ऐसा ही होगा, परंतु आप पढ़ना जारी रखें। इस पुस्तक को इतने खूबसूरत तरीके से लिखा गया है कि आपकी सभी जिज्ञासाओं का समाधान अंत में स्वयं ही हो जाएगा और आप कहेंगे–"ओह, मैं अब समझा, पिछले अध्याय में ऐसा क्यों कहा गया था।"

पुस्तक में दिए गए स्वर्ण नियमों (Golden Rules) का पालन करें . . . आभार प्रदर्शन (Gratitude) को दैनिक प्रयोग में लाएँ . . . आप पाएँगे कि आपके साथ–साथ आपके संपर्क में रहने वाले सभी लोगों को इसका लाभ होगा।

समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता, पैसा ही पैसे को खींचता है, या गरीबों का खून चूसकर ही

अमीर बना जा सकता है, जैसी अपनी दकियानूसी विचारधाराओं को बदलने का प्रयास करें।

पुस्तक में दिए गए संदेशों पर खुले दिमाग से विशेष ध्यान दें। अमूल्य लक्ष्य पर अपना ध्यान जमाए रखें। अपनी सोच से मेल खाते लोगों से इस विषय पर नियमित रूप से विचार विमर्श करते रहें, तथा इसके परिणामों पर नज़र जमाए रहें।

सपने को साकार करने के लिए जरूरी सभी विशेषताएँ आपके अंदर छिपी हुई हैं। चाहे आप अपने बारे में अच्छे विचार न भी रखते हों, आप पहले भारी विफलता का सामना कर चुके हों, आप सोचते हों – मैं तो यह सभी कुछ पहले ही आजमा चुका हूँ, फिर भी आप में अनंत संभावनाएं हैं, जरूरत है तो बस इस पुस्तक में दिए गए संदेशों पर खुले मस्तिष्क से विशेष ध्यान देने की।

एक कहावत है, "यदि आप तैयार हैं तो ईश्वर आपके लिए मार्ग स्वयं तैयार करेगा" जैसे कि आपकी तैयारी को अंजाम देने के लिए यह पुस्तक आज आपके हाथों तक पहुंच चुकी है। याद रखें आपकी और मेरी तरह दुनिया भर के हजारों-लाखों लोगों को इस विशेष पुस्तक की आवश्यकता है। किंतु सवाल यह उठता है कि क्या आप तैयार हैं . . . क्या आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए तैयार हैं . . . क्या आप अमीर बनने के लिए तैयार हैं . . . ? यदि आप अभी भी वह सभी कुछ पाना चाहते हैं जो आप पाना चाहते थे तो यह पुस्तक आपके लिए है।

यदि आप अपना जीवन बदलना चाहते हैं तो जरूरत है बस आपको अपनी सोच को बदल डालने की!

रेबेका फाइन

"आपका इंतजार किसी पर्वत की ऊंचाई को कम नहीं कर देगा।"
"सही मार्ग पर ही सही, आपको दौड़ना तो पड़ेगा ही।"

विल रोजर्स

दरिद्रता मनोस्थिति है,
परिस्थिति नहीं।

दो शब्द

यह पुस्तक किसी की आलोचना करने के लिए अथवा आपको कोई नई फिलॉस्फी सिखाने के लिए नहीं लिखी गई है। यह एक पूर्णत: व्यावहारिक पुस्तक है, जो हर उस स्त्री अथवा पुरुष के लिए समान रुप से उपयोगी है जिसका उद्देश्य सफल एवं धनवान बनना है। यह पुस्तक उनके लिए है जो क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धांत को बिना उसकी गहराई में जाए जानना पसंद करेंगे।

आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप इस पुस्तक में बताए गए सिद्धांतों पर बिना सवाल किए भरोसा एवं अमल करेंगे, जैसे कि आज मारकोनी अथवा एडीसन के सिद्धांतों पर किया जाता है। मेरा दावा है कि जो स्त्री अथवा पुरुष इन नियमों का बेहिचक पालन करेगा, थोड़े ही समय में वह धनी हो जाएगा। क्योंकि ये नियम विज्ञान पर आधारित हैं, इसलिए आपका असफल होना पूर्णत: असंभव है।

इस पुस्तक को लिखते समय भाषा की स्पष्टता, सरलता एवं सादगी का विशेष ध्यान रखा गया है, ताकि सभी लोग कही जा रही बातों का भावार्थ समझ सकें। बताए गए सिद्धांत, इन पर लंबे समय तक किए गए प्रयोगों का निष्कर्ष हैं। अमीर बनिए . . .

शुभकामनाओं सहित आपका

वैलेस डेलोएस वेट्टल्स

इंसान को शक्ति के उस अनंत प्रवाह से निरंतर जुड़े रहना चाहिए, जो ईश्वर से प्राप्त होता है और इसे ईश्वर के पास दोबारा नवीनीकरण के लिए भेज देना चाहिए।

01
अमीर बनिए

दरिद्रता की कोई कितनी भी तरफदारी करे किंतु फिर भी कोई इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकता कि धनी बने बिना परिपूर्ण एवं सफल जीवन जीना कठिन ही नहीं असंभव भी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि धनाभाव के कारण प्रतिभा प्रदर्शन तथा आत्मिक विकास के शीर्ष तक पहुंच पाना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि आत्मिक एवं प्रतिभा विकास के लिए अनेक साधनों की आवश्यकता होती है, तथा धन के अभाव में उनमें से अनेक साधनों को पाना पूर्णत: असंभव है।

साधनों का उपयोग किसी भी व्यक्ति द्वारा मानसिक, आत्मिक तथा शारीरिक विकास के लिए किया जाता है, अत: अर्थव्यवस्था के इस युग में धनी बनने के विज्ञान को हमें जानना ही होगा।

निरंतर विकास ही हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उन्नति को निरंतर योगदान देना हमारा पहला अधिकार भी है और कर्त्तव्य भी।

सर्वप्रथम आप किसी भी वस्तु को प्राप्त करने की बाधा (धनाभाव) को दूर करें तभी मानसिक, अध्यात्मिक तथा भौतिक विकास के लिए तन-मन से काम किया जा सकता है। अर्थात् अपार धन-संपदा को प्राप्त करने अथवा प्राप्त करने के झंझट से मुक्ति को आपकी उन्नति का शुभारंभ माना जा सकता है।

मानव जीवन का उद्देश्य कम में संतोष करना अथवा संतुष्टि को जन्म देना तो बिल्कुल ही नहीं है। और जब आप बड़ी सफलता को पाने की योग्यता रखते हों तो फिर कम में संतोष क्यों किया जाए? प्रकृति भी उन्नति, प्रसार तथा विकास को पसंद करती है। अत: इस कार्य में सक्रिय योगदान देना हमारा धर्म बनता है। अर्थात् अल्पसंतोष से बड़ा अन्य कोई पाप नहीं है। संपन्न एवं संपूर्ण जीवन जीने के लिए जो और जितना भी आपको चाहिए अगर वह सभी कुछ वर्तमान में आपके पास है तो आप अमीर हैं, तथा इस दुनिया में ऐसा कोई भी इंसान नहीं है जो यह सभी कुछ हासिल करने की योग्यता न रखता हो। आज विकास की अंधी दौड़ में जीवन इतना जटिल हो चुका है कि इसे सही ढंग से जीने मात्र के लिए अच्छी खासी पूंजी की आवश्यकता होती है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति अपने सपने को भी साकार करना चाहता है, जो साधनों के उपयोग के बिना संभव नहीं है, तथा साधन जुटाने के लिए आपका आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना अति आवश्यक है। इस पुस्तक के सार को समझने के लिए खुले दिमाग से इन सभी बातों को समझना बहुत ही जरूरी है।

धनवान बनने की कामना रखना कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि आपकी इस इच्छा के पीछे धन, वृद्धि, पूर्णता तथा प्रचुरता की भावना छिपी होती है - जो पूरी तरह प्राकृतिक है, इसलिए जो व्यक्ति अपने जीवन को पूरी तरह से जीने की कामना नहीं रखता हो मेरी नजर में वह असामान्य है, ठीक इसी प्रकार धन की प्राप्ति के लिए संघर्ष से परहेज रखने वाले व्यक्ति को भी असामान्य ही कहा जाएगा।

हम तीन चीजों (शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा) के लिए जीते हैं। इन तीनों में से कोई भी एक-दूसरे से अधिक महत्त्वपूर्ण, पवित्र अथवा विशेष नहीं है, तीनों का अपना विशेष महत्त्व है, तथा इनमें से किसी भी एक के साथ समझौता करके पूर्ण जीवन जीने की कामना करना व्यर्थ है। आज अधिकतर लोग मात्र शरीर के लिए जी रहे हैं। अपनी बात को बड़ी रखने के लिए वे कह सकते हैं-जब तक आपका शरीर सही प्रकार से कार्य नहीं कर रहा हो तब तक आपको स्वस्थ नहीं कहा

जा सकता, परंतु यही बात मस्तिष्क तथा आत्मा के लिए भी समान रूप से लागू होती है। शरीर, मस्तिष्क अथवा आत्मा के पूर्ण प्रदर्शन के अभाव में असंतोष का जन्म होता है। ऐसे में अधूरी कामना निरंतर अपनी पूर्णता का मार्ग खोजती रहती है।

हमारे शरीर को अच्छे रोटी, कपड़ा और मकान के साथ-साथ कठोर परिश्रम से मुक्ति की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त आराम तथा मनोरंजन भी जरूरी है।

इसी प्रकार अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी पुस्तकें पढ़ना, घूमना-फिरना, आनंद का अनुभव करना तथा बुद्धिमान मित्रों की संगत में रहना अत्यावश्यक है। दिमागी कसरत, गीत-संगीत, कला एवं सौंदर्य में रुचि तथा प्रशंसा भी मस्तिष्क को सकारात्मक बनाए रखने में सहयोगी होते हैं।

प्रेम आत्मा का आहार है, तथा दरिद्रता प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति का विरोध करती है। जिन्हें हम प्यार करते हैं उन्हें सहयोग करना हमें अच्छा लगता है क्योंकि समर्पण प्रेम का स्वाभाविक गुण है। किसी व्यक्ति के पास देने के लिए यदि कुछ भी नहीं है तो ऐसे में वह एक अच्छा जीवन साथी, अभिभावक, नागरिक अथवा मनुष्य कैसे बन पाएगा। हम अपने शरीर को सुखी बनाने के लिए भौतिक वस्तुओं का उपयोग करते हैं, जिससे मस्तिष्क तथा आत्मा का भी विकास होता है, इसलिए धनी बनने को प्राथमिकता देना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

पहले तो आपके अंदर अमीर बनने की कामना होनी चाहिए। फिर पूरी एकाग्रता के साथ इसकी पूर्ति के लिए सहयोगी विज्ञान का अध्ययन करें। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो समझिए कि आप अपने कर्त्तव्य से मुंह मोड़ रहे हैं।

याद रखें अगर आप सफल एवं धनवान बनते हैं तो यह आपकी ओर से मानवता तथा ईश्वर को दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ उपहार साबित होगा।

आपके विचार

02
अमीरी का विज्ञान

यह साबित हो चुका है कि गणित एवं भौतिकी के सिद्धांतों की भांति अमीर बनने के भी कुछ नियम हैं। कोई भी व्यक्ति इन्हें सीख सकता है, तथा इनका पालन करके अमीर बन सकता है।

देखा गया है कि एक निश्चित कार्यप्रणाली के साथ निरंतर प्रयास करने से धन की प्राप्ति होती है, जो लोग जाने-अनजाने इस कार्यप्रणाली का पालन करते हैं वे अमीर बन जाते हैं जबकि बाकी लोग कठिन परिश्रम करने के बाद भी गरीब रह जाते हैं।

क्रिया-प्रतिक्रिया के नियम की भांति यह एक अचूक नियम है, इसलिए जो भी स्त्री अथवा पुरुष इसे सीख कर इसका पालन करेगा निश्चित तौर पर वह धनवान बनेगा।

अमीर बनना यदि किसी विशेष दिशा अथवा वातावरण का परिणाम होता तो एक निर्धारित दिशा अथवा वातावरण में रहने वाले सभी लोग अमीर होते, अथवा किसी विशेष शहर के सभी लोग अमीर होते तथा बाकी सभी शहरों के लोग गरीब, या फिर किसी निश्चित देश, प्रदेश अथवा समुदाय के सभी निवासी धनी होते तथा बाकी सभी जगहों के निवासी दरिद्र।

परंतु अगर गौर करेंगे तो आप अमीरों तथा गरीबों को साथ-साथ, एक ही वातावरण तथा पेशे में काम करता हुआ पाएंगे। एक ही जगह के दो लोग समान व्यापार में होते हुए भी गरीब और अमीर हैं, इसका

अर्थ यह हुआ कि आपकी अमीरी अथवा गरीबी किसी वातावरण विशेष का परिणाम नहीं है। कुछ परिस्थितियां आपके लिए अधिक अनुकूल हो सकती हैं, परंतु फिर भी समान वातावरण तथा व्यापार के चलते कुछ लोग सफल हैं और कुछ विफल! अतः कहा जा सकता है कि सफलता अथवा अमीरी एक निश्चित कार्यप्रणाली का परिणाम है। तथा ऐसा भी नहीं है कि इस कार्यप्रणाली पर किसी व्यक्ति विशेष का एकाधिकार है अथवा इसका पालन करने के लिए आप में किसी विशेष प्रतिभा अथवा योग्यता का होना आवश्यक है, क्योंकि इस दुनिया में बड़े से बड़े प्रतिभावान व्यक्ति स्वयं से कम योग्य लोगों की चाकरी कर रहे हैं।

अमीरों का अध्ययन करने पर पाया गया कि ऐसा नहीं है कि औरों के मुकाबले उनमें अधिक बुद्धिमानी, योग्यता या प्रतिभा होती है अथवा ऐसा कोई अन्य गुण जो दूसरों में मौजूद नहीं होता, बल्कि उनकी कार्यप्रणाली बिल्कुल अलग ढंग की होती है।

अमीर बनना कंजूसी अथवा धन संग्रह करने का भी परिणाम नहीं है क्योंकि खुलकर पैसा खर्च करने की आदत भी अधिकतर अमीरों में ही पाई जाती है, इसके विपरीत कंजूसी तथा बचत जैसी आदतें गरीबों की शोभा होती हैं।

न ही अमीर उन चीजों को करने से धनी होते हैं, जिन्हें करने में अन्य लोग विफल हो जाते हैं क्योंकि एक ही व्यापार में समान चीजें करने पर भी कुछ लोग सफल हो जाते हैं और कुछ दिवालिया।

उपरोक्त सभी बातों से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अमीर बनने के लिए एक निर्धारित कार्यप्रणाली पर निरंतर प्रयास करना बहुत ही जरूरी है। और अगर यह बात सच है तो क्रिया-प्रतिक्रिया सिद्धांत की भांति अमीरी का सिद्धांत भी लिपिबद्ध किया जा सकता है, जिसे सीखकर उसका पालन करके कोई भी स्त्री अथवा पुरुष धनवान बन सकता है। इसे अमीरी के विज्ञान की नई संज्ञा दी जा सकती है।

दुनिया भर में अमीरों की संख्या कम तथा गरीबों की ज्यादा संख्या को देखते हुए सवाल किया जा सकता है कि अमीर बनने का

मार्ग कहीं कठिन तो नहीं? जैसा कि हम अध्ययन कर चुके हैं यह बात सत्य नहीं है, क्योंकि प्रकृति ने अमीर बनने के लिए जरूरी गुण हम सभी में पहले ही से डाले हैं तभी तो बुद्धिमान, प्रतिभावान, मूर्ख, स्वस्थ, अस्वस्थ, बलवान तथा कमजोर सभी प्रकार के लोग अमीर बन चुके हैं।

जहाँ तक सुनने, सोचने और समझने की बात है तो मेरा मानना है कि जो भी स्त्री अथवा पुरुष मेरी बातों के अर्थ को समझ सकता है निश्चित तौर पर वह अमीर बन सकता है।

हमने यह भी जाना कि हमारा अमीर बनना किसी वातावरण विशेष पर निर्भर नहीं करता। हां, कुछ जगह ऐसी जरूर हैं जहां यह नियम लागू नहीं होता जैसे कि सहारा मरुस्थल।

अमीर बनने में आपका लोकव्यवहार भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ग्राहकों के रुझान को समझना भी एक कला है। परंतु यह भी भाषा, माहौल तथा जगह के हिसाब से बदल जाता है। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि यदि आपके शहर का एक भी व्यक्ति अमीर बन सकता है तो आप क्यों नहीं।

मैं पुनः दोहरा दूँ कि अमीर बनने के लिए किसी विशेष व्यापार अथवा पेशे को चुनने की आवश्यकता नहीं है। लोग सभी प्रकार के व्यापार में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। तथा इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है यदि समान व्यवसाय में आपका पड़ोसी आपसे या आप उससे अधिक कामयाब हैं।

जिस काम में आपकी रुचि है अगर आप उसी में हाथ डालेंगे तभी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाएंगे। साथ ही सही प्रकार से विकसित किए गए गुण (प्रतिभा) आपकी सफलता की गारंटी बन सकते हैं। अपने वातावरण के अनुकूल व्यापार का चुनाव करें – आइस्क्रीम का व्यापार करने के लिए ठंडी जलवायु की जगह गर्म प्रदेश अधिक उपयुक्त रहते हैं, मत्स्य उद्योग के लिए फ्लोरिडा के स्थान पर अमेरिका के उत्तर-पश्चिमी भाग अधिक उपयोगी हैं।

आपकी सफलता किसी व्यवसाय विशेष पर निर्भर नहीं करती,

इसके लिए आपको एक सुनिश्चित कार्यक्रम का निरंतर पालन करना होता है। यदि समान व्यापार में आपका पड़ोसी आपसे अधिक कामयाब है तो इसका सीधा सा अर्थ आप दोनों की कार्यप्रणाली का अंतर है। यदि आप भी धनी बनना चाहते हैं तो किस्मत को कोसना छोड़कर आपको अपने पड़ोसी का अनुकरण करना होगा।

धनाभाव किसी के धनी बनने के मार्ग में बाधा पैदा नहीं करता। यदि आपके पास बहुत सारा धन है तो आपको धनी बनने के विषय में चिंता करने की जरूरत ही नहीं है। यदि आप रुपए-पैसे की तंगी से ग्रस्त हैं और आप अमीरी के विज्ञान का पालन करना आरंभ कर देते हैं तो कुछ ही समय बाद आप पाएंगे कि आप धनी बनना शुरु हो जाते हैं। धन संपत्ति का आना इस बात का तो सूचक है ही कि आप अमीर बनते जा रहे हैं साथ ही यह बात का भी सूचक है कि आप अमीरी के विज्ञान का पालन सही प्रकार से कर रहे हैं।

आप इस धरती के सबसे अधिक दरिद्र इंसान हो सकते हैं, हो सकता है आप बुरी तरह कर्ज में डूबे हों, कोई भी आपका मित्र न हो, आप अप्रभावी हों अथवा आपके पास साधनों की कमी हो, इसके बावजूद भी जब आप अमीरी के सिद्धांतों का पालन करना आरंभ कर देते हैं तो क्रिया-प्रतिक्रिया नियम के अनुसार आपका अमीर बनना तय हो जाता है। आपके पास पैसा नहीं है तब भी आप धनी बन सकते हैं। यदि आप गलत व्यवसाय में हैं, आप अपने लिए एक मनपसंद व्यापार का चुनाव कर सकते हैं। आप गलत शहर अथवा प्रदेश में रहते हैं तो आप अपनी मनचाही जगह पर जा सकते हैं और आप यह सभी कुछ वर्तमान वातावरण तथा व्यापार में रहकर, अमीरी के उस विज्ञान का पालन करते हुए कर सकते हैं जिसका परिणाम सौ प्रतिशत सफलता है। आइए प्रकृति के नियमों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें।

"अवसर किसी काम में नहीं बल्कि आप में छिपा होता है।"

प्रयास रहित सफलता

हममें से अधिकतर लोग मानते हैं कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, शायद इसीलिए अधिकतर लोग कठिन परिश्रम के सहारे अपने सपने साकार करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

ऐसा हम इसलिए करते हैं क्योंकि हमें अपने विचारों की शक्ति का अंदाजा नहीं होता। गौर करने पर आपको पता चलेगा कि 90 प्रतिशत से भी अधिक लोग नकारात्मक विचारों के साथ अपने सपने साकार करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। चीनी दार्शनिक लाओत्से (Lao-Tsu) के अनुसार, "जैसे-जैसे आप अपनी मंजिल के नजदीक पहुंचते जाएंगे, आप पाएंगे कि वहां आपके श्रम की नाममात्र ही आवश्यकता होती है।"

हमारे अमेरिका में भी अधिकतर लोग श्रम को ही प्रधानता देते हैं, अतः वे काम में तब तक डूबे रहते हैं जब तक कि वे थक कर चूर न हो जाएं। परंतु मेरा मानना है कि कठिन परिश्रम, मेहनत, मशक्कत अब बीते समय की बातें हो चुकी हैं क्योंकि अब समय है प्रयास मुक्त सफलता पाने का।

अधिकतर लोगों का मानना होता है कि यदि वे प्रयास ही नहीं करेंगे तो उन्हें कुछ भी हासिल नहीं होगा। अर्थात् कुछ भी हासिल करने के लिए सर्वप्रथम उन्हें प्रयास करने होंगे।

उद्देश्य जरूरी हैः

यह सच है, कुछ भी होने अथवा करने के लिए आपके प्रयासों से अधिक उद्देश्य की आवश्यकता होती है। किसी भी चीज को पाने की

तीव्र इच्छा को जाग्रत करके आप अपने प्रयासों को न्यूनतम बना सकते हैं। ऐसे में आप शंका, भय, उतावलापन, चिंता तथा अभाव से मुक्त हो जाते हैं।

जब आप जानते हों कि आपको क्या चाहिए
बजाए इसके कि आपको क्या नहीं चाहिए,
समझें यही समय है, सही शुरुआत का।

और तब आपके सभी प्रयास परिश्रम से मुक्त हो जाएंगे। संभावनाओं के सभी द्वार खुलने लगेंगे तथा समस्त प्रकृति सपने को पाने में आपकी पूरी मदद करेगी।

अत: भूलकर भी तब तक अपने प्रयासों की शुरुआत न करें जब तक कि आपका सपना आपकी नींद और चैन को उड़ा न डाले। आपके कीमती प्रयासों को शुरुआत देने का समय आ चुका है अथवा नहीं, यह जांचने के लिए:

अपने सपने पर गौर करें
यदि आपको इसे लेकर उत्कण्ठा महसूस होती है
तो इसका सीधा सा अर्थ है कि अभी आप
पूरी तरह तैयार नहीं हैं . . .

तैयार होने पर आप स्वयं को परिश्रम तथा पीड़ा रहित अवस्था में खड़ा हुआ पाएंगे। ऐसे में अदृश्य शक्तियां आपका सपना साकार करने में आपकी मदद कर रही होंगी। बस आपको अपनी तैयारी पूरी रखनी है।

अक्सर आपने देखा होगा कि कुछ लोग बहुत ही कम मेहनत करके वह सभी कुछ पा लेते हैं जो और जितना बहुत सारे लोग कठिन परिश्रम के बाद भी पाने से वंचित रह जाते हैं।

कहीं यह आपको नाइंसाफी तो नहीं लगती?

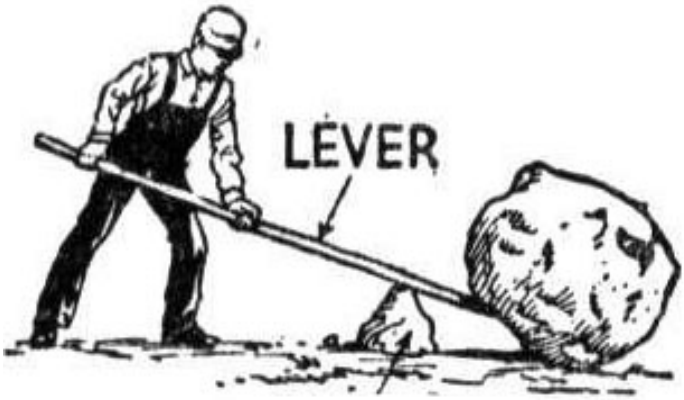

आपको स्पष्ट कर दूं कि यह नियम आपने या मैंने नहीं बनाया है बल्कि यह पूरी तरह प्राकृतिक है।

दुर्भाग्य से, जो लोग कठिन परिश्रम करने के बावजूद भी कम ही बना पाते हैं, वे लीवरेज (Leverage) के नियम के विरोधी होते हैं। अपने जीवन को कठिन मार्ग पर धकेलने के लिए वे स्वयं दोषी होते हैं। कुछ भी हासिल करने के लिए वे बस मेहनत का सहारा लेना जानते हैं, क्योंकि बचपन ही से उन्हें सिखाया जाता है, "नो पेन, नो गेन?" अर्थात् बिना पीड़ा के उपलब्धि की कामना रखना व्यर्थ है।

अब जरा इस पर भी गौर करें:

परिश्रम एवं पीड़ा के दौरान आपका पूरा ध्यान इस दिशा में कार्य कर रहा होता है कि आपको क्या नहीं करना चाहिए बावजूद इसके कि आपको क्या करना है।

प्रयास भी आवश्यक हैं,
परंतु निर्माण की प्रक्रिया में
इनकी आवश्यकता सबसे अंत में होती है।

"मूर्ख लोग करने के बाद सोचते हैं जबकि बुद्धिमान लोग करने से पहले।"

अत: किसी कार्य को शुरु करने का सबसे अच्छा माध्यम है आपके विचार।

संसार की प्रत्येक वस्तु का निर्माण अनेक सूक्ष्म तत्त्वों (क्वांटा) के संयोग से हुआ है, जिसे श्री वेट्रल्स ने 'मूल तत्त्व' के नाम से पुकारा है। भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में यह मूल तत्त्व अलग-अलग आवृत्तियों (frequency) पर कम्पन्न (Vibrate) करता है। जब आप अपने विचार के विषय में गहराई से सोचते हैं तो आपका मस्तिष्क उससे संबंधित तरंगों को ब्रह्माण्ड में प्रसारित करने का कार्य करता है, जो आपके विचार से मेल खाते हुए तत्त्वों में कम्पन्न पैदा करके उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना आरंभ कर देती हैं। धीरे-धीरे प्रकृति भी आपके विचार के अनुरूप वातावरण तैयार करने का कार्य करती है, जिसके परिणाम स्वरूप आप बहुत ही कम (सूक्ष्म) प्रयास करते हुए मनचाहे को प्राप्त कर जाते हैं।

यह क्वांटम फिजिक्स का ही कमाल है

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सपने साकार करना भी सकारात्मक सोच का नहीं बल्कि क्वांटम फिजिक्स (Quantum Physics) का ही चमत्कार है।

प्रकृति, क्वांटम ऊर्जा की सहायता से आपके विचार तथा आदेशों को साकार रूप प्रदान करने का कार्य करती है। वह आपके सभी विचारों (नकारात्मक अथवा सकारात्मक) के साथ समान व्यवहार करती है, परंतु साकार रूप आपके केवल उन्हीं विचारों को दिया जाता है जिनके साकार होने को लेकर आप पूरी तरह विश्वस्त रहते हैं।

संभावनाओं को नंगी आंखों से देख पाना असंभव होता है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि ये मात्र कोरी कल्पनाएं होती हैं। एक रपट के अनुसार - अपने पूरे जीवन में हम जो कुछ भी बनाते हैं, उसका 99 प्रतिशत से भी बड़ा हिस्सा हमारे सोचने मात्र से तैयार हो जाता है (जिसे हम देख नहीं पाते क्योंकि मानव नेत्र मात्र भौतिक प्रमाण को ही देख पाने के लिए अभ्यस्त होते हैं) मानव श्रम तो मात्र शेष एक प्रतिशत को एकत्रित करने का कार्य करता है।

निश्चितता (Certainty) वह बल है जो विफलता तक को परास्त करने की ताकत रखता है। यह अति आवश्यक है क्योंकि इसके अभाव में संभावनाएं कोरी कल्पनाएं बन जाती हैं। जब आप सपना साकार करने की दिशा में प्रयास करते हैं तो प्रकृति आपके मस्तिष्क में आपके सपने के प्रति निश्चितता एवं सूचना के आधार पर उसके चारों तरफ क्वांटम ऊर्जा की एक अदृश्य परत तैयार करना आरंभ कर देती है। यह कार्य उतनी ही रफ्तार से होता है जितनी रफ्तार के साथ आपका मस्तिष्क किसी विचार को उसकी निश्चितता के आधार पर जन्म देता है। संक्षेप में कहा जाए तो आपके प्रयास (Action) आरंभ हों उससे पूर्व ही क्वांटम स्तर पर निर्माण कार्य पूरा हो चुका होता है।

सेमिनार के दौरान एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, "किसी भी निर्माण के दौरान सर्वाधिक कठिन कार्य कौन सा होता है?"

मैंने जवाब दिया, "अपने उन विचारों को रोकना जो रह रहकर सवाल करते हैं कि यह कैसे हो पाएगा, क्योंकि ये सवाल ही आपकी कार्यक्षमता को नष्ट करने का कार्य करते हैं।"

रुपया-पैसा ही सब कुछ नहीं होता !

यह बात आपने अपने बड़े-बुजुर्गों से सुनी ही होगी, हो सकता है अर्थव्यवस्था के नए दौर में आप इस बात से सहमत नहीं हों परंतु इस बात में दम है। इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति रुपए पैसे से प्यार नहीं करता। आप शेयर बाजार में पैसा लगाते हैं, हजार जगह पैसा निवेश करते हैं, अधिक घंटे काम करते हैं, चांदी बेचते हैं, सोना खरीदते हैं तो क्या सिर्फ इसलिए कि आपको पैसे से प्यार हो गया है? यदि आपको सिर्फ ढेर सारी दौलत चाहिए होती तो मात्र एक बड़े बैंक बैलेंस के साथ आप इस दुनिया के सबसे सुखी इंसान होते, फिर आप इसे अपनी जेब में भरकर बाहर बाजार में शॉपिंग करने नहीं जाते।

अत: यह बात समझ लेनी जरूरी है कि रुपया-पैसा वह माध्यम है जिसके द्वारा हमारा उन चीजों तक पहुंच पाना संभव हो जाता है जिन्हें हम पाना चाहते हैं, जैसे अच्छा घर, कीमती कार, छुट्टियां, आजादी, देश-विदेश भ्रमण, अच्छे कपड़े तथा और भी बहुत कुछ।

जब आप अमीर बनने का फैसला कर लेते हैं, तो आपका मस्तिष्क भी उसी दिशा में कार्य करना आरंभ कर देता है।

"किसी चीज के मात्र पता होने से आपका जीवन नहीं बदल जाता बल्कि उसे जानकर प्रयास करने से ऐसा होता है।"

डॉ. रॉबर्ट ऐंथोनी

'Know How To Be Rich' ऑडियो प्रोग्राम की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट का भ्रमण करें।

प्रचुरता का सिद्धांत

हम अंनत ब्रह्माण्ड में रहते हैं। जिन लोगों को पूर्ण विश्वास है यहां उनके लिए प्रचुरता की कमी नहीं है उन सभी के लिए यहां अपार धन संपदा है। यहां अभाव के चलते किसी को भी निर्धन नहीं रखा गया है। अत: आप जो कुछ भी चाहें उसे प्राप्त कर सकते हैं, जरूरत है तो बस दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ सही अवसर पर निरंतर प्रयास करने की। आप अमीर बनेंगे या नहीं यह प्रचुरता के प्रति आपके दृष्टिकोण (नजरिए) पर निर्भर करता है।

प्रचुरता के नियमानुसार - जो लोग ठान लेते हैं उन्हें अमीर बनाया जाता है।

लोग अमीर बनते हैं क्योंकि उन्हें अपनी योग्यता पर विश्वास होता है। वे एक सुनिश्चित दिशा में प्रयास करते हैं, तथा अपना सपना साकार करने में रात दिन एक कर देते हैं।

प्रचुरता का दूसरा नियम कहता है - जो लोग फैसला नहीं करते वह स्वयं ही गरीब रह जाते हैं।

बॉब जिन की पुस्तक 'रैट रेस' में एक बूढ़ा धनी व्यक्ति उस नौजवान, जो उससे अमीर बनने का फार्मूला पूछने आया था, से पूछता है, "तुम्हें पता है, तुम अभी तक अमीर क्यों नहीं बन पाए?"

अगर यही सवाल मैं आप लोगों से पूछूं तो आप इसका क्या जवाब दोगे? आज यही सवाल स्वयं के बारे में बहुत कुछ पता लगाने का एक माध्यम बन सकता है।

मेरी सलाह है कि इसके जवाब में आप स्वयं को अमीर बनने से रोकने वाले कारणों की एक सूची तैयार करें। आपको जानकर हैरानी होगी कि आपके पास ऐसा न कर पाने के एक हजार से भी अधिक ऐसे बहाने हैं, जिनसे आपको प्यार हो चुका है।

लेकिन अब समय आ चुका है कि इनसे पीछा छुड़ाया जाए। संसार भर में हजारों ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने कठिनाइयों से पार पाना सीख कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

अतः निराशा छोड़कर सफलता के लिए कमर कस लें। पूरी ईमानदारी के साथ उन बाधाओं को ढूंढ निकालें जिनके चलते अभी तक आप अमीर नहीं बन पाए हैं, तथा हर अच्छे-बुरे अनुभव से सीख लेते हुए आगे बढ़ते रहने का फैसला करें।

ब्रायन ट्रेसी

"अधिकतर लोग इसलिए अमीर नहीं बन पाते क्योंकि जिंदगी भर वे दूसरों के लक्ष्यों पर काम करते रहते हैं।"

- जे. पॉल गैट्टी

कार्य मुक्ति की तलाश

"आलसी मनुष्य किसी भी राष्ट्र की तरक्की में सबसे बड़ी बाधा होते हैं।"

आर. बुकमिंस्टर फुलर

कठोर परिश्रम, यही एक ऐसी चीज है जिसे करने से अधिकतर लोग कतराते हैं। मैं अपने ऐसे बहुत सारे दोस्तों को जानता हूँ जो डींगे मारते नहीं थकते, "मुझे सोलह घंटे काम करना अच्छा लगता है।" आगे बढ़ने की कामना के साथ अधिक घंटों तक काम करने में मैं नहीं समझता कि कोई बुराई है, सिवाए इसके कि इसमें आपको थोड़ा अपने स्वास्थ्य, परिवार, खुशियों तथा नींद के साथ आजीवन समझौता करना पड़ सकता है।

परंतु जब आप दुनिया के सर्वाधिक धनी आदमी बनना चाहते हों तब आपकी इस 16 घंटे की सीमित मानसिकता के साथ काम चलने वाला नहीं। क्योंकि एक घंटे काम करके आपको जितना लाभ मिलता है, दो घंटे काम करके निश्चित ही आपको दो गुना लाभ मिलेगा, परंतु करोड़पति मानसिकता की पूर्ति के चलते आपको नए प्रकार के गणित को खोजना ही होगा।

शायद आपको पता ही होगा कि सफलता, कठिन परिश्रम के व्युत्क्रमानुपाती (Inversely Proportional) होती है अर्थात् कठिन परिश्रम के घटने के साथ सफलता की दर में बढ़ोत्तरी होती है। इसका सीधा सा अर्थ यह हुआ कि यदि परिश्रम का मान शून्य कर दिया जाए तो असीमित सफलता तक पहुंचा जा सकता है।

सम्पूर्ण विश्व कठिन परिश्रमियों से भरा पड़ा है परंतु उनमें से बहुत ही कम लोग सफल हैं। अर्थात् परिश्रम ही सफलता की कुंजी है का राग अलापने वाले लोग आपको गुमराह कर रहे हैं। अत: बड़ी सफलता चाहिए तो अपने अंदर कुछ भी न करने की योग्यता (Effortlessness) को पैदा करें, तभी सच्चे अर्थों में आप सफल बन सकेंगे।

किसी भी कारखाने पर नजर दौड़ाएं तो आपको पता चलेगा कि जो जितना अधिक कठिन परिश्रम करता है उसे उतना ही कम वेतन दिया जाता है। ठीक इसके विपरीत कम मेहनत करने वाले लोगों को ही अधिक वेतन मिलता है। कोई व्यक्ति अपने शारीरिक बल का उपयोग करके यदि बिजली बनाने का प्रयास करे तो आजीवन कठिन से कठिन परिश्रम करके भी वह 4.30 डॉलर से अधिक मूल्य की बिजली नहीं बना पाएगा। यानी कि अब मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि कम से कम कठिन परिश्रम करके ही अधिक से अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

"प्रेरित करने के लिए हमें विफलता से डराया जाता है।"

– फ्रेड ग्रटजोन

Health Mantra

Health is Wealth

by

Wallace Delois Wattles

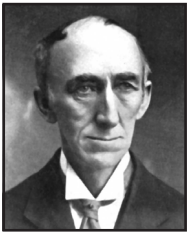

Best Selling Author of
Science of Getting Rich
Science of Being Great
Science of Being Well

&

New Christ

The Science of Getting Rich
(Secret Behind THE SECRET)

The Science of Getting RICH is more than 100-year-old book that inspired Rhonda Byrne's bestselling The Secret- Explains the precise series of practical steps that, if followed, guarantee prosperity- Reveals the secrets that underlie today's success and prosperity movements. In his bestselling book, Wallace D. Wattles explains that "universal mind" underlies and permeates all creation. Through the process of visualization we can engage the law of attraction - impressing our thoughts upon "formless substance" and bringing the desired object or circumstances into material form. The author emphasizes the critical importance of attitude: only by aligning ourselves with the positive forces of natural law can we gain unlimited access to the creative mind and its abundant rewards. The Science of Getting Rich holds the secret to how economic and emotional security can be achieved in a practical, imaginative, and noncompetitive way, while maintaining a loving and harmonious relationship with all of life. By living in accordance with the positive principles outlined in this book, we can find our rightful place in the cosmic scheme and create for ourselves an environment in which to grow in wealth, wisdom, and happiness. Rhonda Byrne, in her book, The Secret, tells how a 100+ year-old book entered her life and changed it forever. Here is that book. Written in 1910, The Science of Getting Rich inspired Byrne to create her bestselling video, and subsequently, to write her book. She has said that it gave me a glimpse of The Secret. It was like a flame inside of my heart. And with every day since, it's just become a raging fire of wanting to share all of this with the world. "There is a science of getting rich. It is an exact science, like algebra or arithmetic. There are certain laws which govern the process of acquiring riches. Once a person learns and obeys these laws, he will get rich with mathematical certainty." - Wallace D. Wattles, The Science of Getting Rich

दरिद्रता एक दिन इतिहास बन जाएगी,
तब इसे संग्रहालय में रखा जाएगा।

www.scienceofgettingrich.co.in